

रो रही शबरी ^{SSSSS} आये न राम ^{SSSSS} ॥२॥

गुरू मतंग की ^{SSSS} चानी यही थी ^{SSSSS} साह मिलेगे प्रभु राम ^{SSSSS} ॥२॥

रो रही शबरी ----- गुरू मतंग -----

① रो रो शबरी ^{SSSSS} सह निघरे ^{SSSSS}
कुरिया आंगन ^{SSSSS} सह बुधरे ^{SSSSS}
आते ही लगे, मेरे राम ^{SSSSS} ॥२॥

रो रही शबरी ----- गुरू मतंग -----

② चख चख बेर का थाल सजाये ^{SSSSS}
अपने मन को, यों समभाये ^{SSSSS}
भूखे न हों, मेरे राम ^{SSSSS} ॥२॥

रो रही शबरी ----- गुरू मतंग -----

③ शबरी की सबरी ^{SSSSS} बीती अमरिया ^{SSSSS}
अंसुअन जल से ^{SSSSS} सींचे ढगरिया ^{SSSSS}
बाट, निघरु ^{SSSSS} अविशम ^{SSSSS} ॥२॥

रो रही शबरी ----- गुरू मतंग -----

④ मन की पीरा ^{SSSSS} मन ही जाने ^{SSSSS}
आओ प्रभु न ^{SSSSS} बनी अजाने ^{SSSSS}
रुटती ^{SSSSS} आठ याम ^{SSSSS} ॥२॥

रो रही शबरी ----- गुरू मतंग -----

(५) दर्शन के बिना - कैसे जिअगी
विश्व अगन को, कैसे सहूँगी
मन में विचार सुबह शाम ॥२॥

ये रही शबरी - - - - - गुरु मतंग - - - - -

(६) राह निहारत, जीवन बीता
"श्रीबाबा श्री" का प्रेम पुनीता
आन मिलौ, अर्ब राम ॥२॥

ये रही शबरी - - - - - गुरु मतंग - - - - -